

# फिल्मी संगीत में राग काकू और यन्त्र काकू का प्रयोग

मोहनीश आर्या

शोधकर्ता Ph.D.

पंजाब विश्वविद्यालय

संगीत एक ललित कला है। इसके अतर्गन गायन, वादन नृत्य तीनों आते हैं। संगीत क मुख्य उद्देश्य भावों की अभिव्यक्ति और मनोरंजन करना है। भारतीय संगीत में शास्त्रीय संगीत और फिल्मी संगीत दोनों का महत्वपूर्ण योगदान है। शास्त्रीय संगीत को राग संगीत भी कहा जाता है। राग ही भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार स्तम्भ है। जहां राग गायन का प्रयोग साधना, भक्ति इत्यादि के लिए होता है। वहीं फिल्मी संगीत का प्रयोग जनसाधारण के मनोरंजन के लिए और भिन्न-भिन्न प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति के लिए होता है। फिल्मी संगीत जो आज बहुत ही प्रचार और प्रसार में है। जनसाधारण के मनोरंजन का एक सरल माध्यम भी है। फिल्मी संगीत में भिन्न-भिन्न भावों की अभिव्यक्ति "काकू" की सहायता से संभव हो पाती है। ग्रंथ भरतकोश में "काकू" के बारे में बताया गया है कि जब कोई शब्द या पक्ति स्वरों के माध्यम से मंद्र, मध्य और तार तीनों स्थानों भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रयोग की जाए तो वह "काकू" कहलाता है। भरत के ग्रंथ नाट्यशास्त्र में इसके दो प्रकार साकांश तथा निराकांश और शारंगदेव के ग्रंथ संगीत रत्नाकर में इसके छः प्रकार स्वर काकू, राग काकू, अन्य राग काकू, देश काकू, क्षेत्र काकू तथा यन्त्र काकू।

क्योंकि राग भिन्न-भिन्न प्रकार के रस और भावों की अभिव्यक्ति के लिए अत्यधिक लाभदायक है इस लिए इनका प्रयोग भी फिल्मी संगीत में किया जाता रहा है। जहां किसी राग का कोई मुख्य अंग हो या पूर्ण रूप से वह रचना राग में ही रचित हो वह "राग काकू" कहलाता है और भिन्न-भिन्न प्रकार के वाद्यों का प्रयोग एक ही सांगीतिक रचना में हो तो वह यन्त्र काकू कहलाता है। जिससे वह रचना अधिक आकर्षक और मनोरंजक बन जाती है।

उदाहरण के लिए फिल्म “कोहीनूर” की एक रचना “मधुबन में राधिका नाचे रे” जो राग हमीर में रचित है और ताल तीन ताल का प्रयोग किया गया है।

मधुबन में राधिका नाचे रे

गिरधर की मुरलिया बाजे रे

मधुबन में राधिका .....

पग में घुँघर बाद्दध के, घुँघटा मुख पर डाल के

नैनन में कजरा लगा के रे मधुबन में राधिका

डोलत छम-छम कामिनी चमकत जैसे दामिनी

चंचल प्यारी छब लागे रे मधुबन में राधिका

म्रिदंग बाजे तिरकिट धूम तिरकिट धूम ता ता

नाचत छूम छूम ताथई ताथई ता ता

छूम छूम छा ना ना ना छूम छूम छा ना ना ना

क्रांध क्रांध क्रांध धा, धा धा धा

मधुबन में राधिका नाचे रे

मधुबन में राधिका

नी सा रे सा, गा रे मा गा, पा मा धा पा, नी धा सां नी

रें सां रे सा नी धा पा मा पा धा नी सां रें सां नी धा पा मा

गा मा धा पा गा मा रे सा

मधुबन में राधिका नाचे रे

सां सां, सां नी धा पा मा पा धा पा गा मा रे सा नी रे सा

सा सा गा मा धा धा नी धा सां

मधुबन में राधिका नाचे रे

मधुबन में राधिका

ओदे नादिर दिरधा नीता धारे दीम दीम तानाना

नादिर दिरधा नता धारे दीमदीम तानाना

ना दिर दि धा नी ता धा रे दीम दीम ता ना ना

ना दिर दिर धा नी ता धा रे

ओ दे ताना दिर दिर ताना, दिर दिर दिर दिर दूम दिर दिर दिर

धा तिरकिट तक दूम तिरकिट तक

तिरकिट तिरकिट ता धा नी  
ना दिर दिर धा नी ता धा रे

इसके साथ ही गीत में घुंघरू, तानपूरा, सरोद, सांरगी, वायलन और सितार आदि वाद्यों का बहुत ही सुन्दर प्रयोग किया गया है। गीत में मृदंग के बोलों के भाव, तराने के बोलो के भाव और राग हमीर की स्वरावली के भावों के समावेश से हमें भिन्न-भिन्न प्रकार के काकू के दर्शन होते हैं। जो कि शात्रोक्त सिद्धांत की दृष्टि से राग काकू और यन्त्र काकू का एक अच्छा उदाहरण है।

इसी प्रकार से “सुख के सब साथी” यह रचना राग दरबारी में रचित है जो भजन ताल में बद्ध है।

सुख के सब साथी दुख में न कोई  
मेरे राम, मेरे राम  
तेरा नाम है साचा दूजा न कोई  
जीवन आनी जानी छाया  
झूठी माया झूठी काया  
फिर काहे हो सरी उपरिया  
पाप की गठरी ढोई  
ना कुछ तेरा ना कुछ मेरा  
ये जग जोगीवाला फेरा  
राजा हो या रंग सभी का  
अंत एक सा होई  
बाहर की तू माटी फांके  
मनके भीतर क्यूं न झांके  
उजले तनपर मान किया और  
मनकी मैल न धोई

इस गीत में राग दरबारी के स्वरों में करुण रस और विरह का भाव प्रकट किया गया है। जो श्रोताओं के मन को भावुक और आनन्दित करता है। इस गीत में तानपुरा, तबला, मंजीरा, वायलन, बांसुरी आदि वाद्यों के प्रयोग से भक्ति रस का पूर्ण निष्पादन होता है। जो राग काकू और यन्त्र काकू का अच्छा उदाहरण है।

इस प्रकार “जब दीप जले आना” यह रचना राग यमन में रचित है

और इस गीत में तबला, सितार, प्लेटतरंग, बांसुरी, वायलन, स्वरमंडल आदि का प्रयोग किया गया है। जिसमें प्रेम रस, शृंगार रस की निष्पत्ति प्रतीत होती है।

इस प्रकार से फिल्मी संगीत और शास्त्रीय संगीत के रागों का आपस में गहरा सम्बन्ध प्रतीत होता है। जिसका लाभ हमें हर प्रकार से प्राप्त होता जा रहा है जो "काकू" के प्रयोग से अत्यधिक भावात्मक और रंजनात्मक बन पाता है।